

7.1 Textkorpusliste

Verzeichnis der in den Korpuslisten verwendeten Abkürzungen:

| | |
|-----------|--|
| Nr. | fortlaufende Nummer des gesamten Textkorpus |
| Jahr | Jahr der Ersterscheinung bzw. Abfassung, soweit ermittelbar. (Gelegentlich führt das zu Korrekturen von Schmidts Angaben.) |
| schm | Nummer aus Schmidts «Litteratur des bürgerlichen Trauerspiels» |
| + | Text in Schmidts Listen ausländischer Texte enthalten |
| – | nicht in Schmidts «Litteratur des bürgerlichen Trauerspiels» enthalten |
| ? | Keine Angaben zur bibliographischen, typologischen oder gattungssystematischen Bestimmung |
| Tr. | Trauerspiel |
| bgl. Tr. | bürgerliches Trauerspiel |
| her. Tr. | heroisches Trauerspiel |
| Ssp. | Schauspiel |
| Lsp. | Lustspiel |
| hist. Dr. | historisches Drama |
| Rit.ssp. | Ritterschauspiel |
| A. | Aufzug/Akt |
| H. | Handlung i. S. von Akt |
| Jus | Kontextreferenz auf zeitgenössische Rechtssprechung |
| Päd. | Kontextreferenz auf zeitgenössische Pädagogik |
| Theol. | Kontextreferenz auf zeitgenössische Theologie |
| (R) | Roman als Textvorlage |
| E | intertextueller Bezug auf Lessings «Emilia Galotti» |
| S | intertextueller Bezug auf Lessings «Miß Sara Sampson» |
| W | intertextueller Bezug auf Goethes «Werther» |
| K+L | intertextueller Bezug auf Schillers «Kabale und Liebe» |

Das Textkorpus setzt sich aus Christian Heinrich Schmidts «Litteratur des bürgerlichen Trauerspiels» von 1798 und eigenen Ergänzungen zusammen. Zu jedem Text ist die fortlaufende Korpusnummer angegeben, das Jahr der ermittelten Ersterscheinung (mit Vorbehalten), die Nummer in Schmidts Liste, der Kurztitel des Textes, seine Typuszugehörigkeit, seine Gattungszugehörigkeit, eventuell vorhandene Prätexte (nur die wichtigsten) und Kontextreferenzen (nur theologie-, pädagogikgeschichtlicher und juristischer Kontext berücksichtigt). Nach der Textkorpusliste können die Nummern von Schmidts Titelliste ermittelt werden, nach denen wiederum im Primärtextverzeichnis 7.3.1 die vollständigen bibliographischen Angaben zu finden sind.

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|---------|--------|---|-------|-----------|----------|---------|
| 001 | 1745 | + | [Anonymus], Der Zügel-lose, Ssp. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 002 | 1752 | + | H. A. v. Bassewitz, Der Kaufmann von London, bgl. Tr. in 5 H. | [1b] | bgl. Tr. | Lillo | – |
| 003 | 1753/54 | + | J. J. Bode, Der Spieler, [bgl. 1766] Tr. in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | Moore | – |
| 004 | 1755 | + | J. H. Steffens, Beverly oder der Spieler, bgl. Tr. in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | Moore | – |
| 005 | 1755 | 001 | G. E. Lessing, Miß Sara Sampson, bgl. Tr. in 5 A. | [4h'] | bgl. Tr. | – | – |
| 006 | 1753/55 | 002 | Chr. L. Martini, Rhynsolt und Sapphira, Pros. Tr. in 3 H. | [1] | hist. Dr. | Gellert | – |
| 007 | 1756 | 003 | J. G. B. Pfeil, Lucie Woodvil, bgl. Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | – |
| 008 | 1756 | 003[a] | [Anonymus], Das Mutter-Söhnchen, Pros. bgl. Tr. in 3 A. | [1'] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 009 | 1756 | – | [Anonymus], Der verschwenderische Kaufmann, Ssp. in 5 H. | [3] | Lsp/Ssp. | – | Theol. |
| 010 | 1757 | 004 | G. Fr. Klopstock, Der Tod Adams, Tr. in Prosa | [5'] | bibl. Dr. | – | Theol. |
| 011 | 1759 | 007 | Margarete Klopstock, Der Tod Abels, Tr. in 3 H. | [5'] | bibl. Dr. | – | Theol. |
| 012 | 1757 | 005 | J. W. v. Brawe, Der Freigeist, Tr. in Prosa u. 5 A. | [1s] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 013 | 1757/58 | 006 | Chr. G. Lieberkühn, Die Lissabonner, bgl. Tr. in 1 A. | [4h] | bgl. Tr. | – | – |
| 014 | 1757/59 | 008 | K. Th. Breithaupt, Der Renegat, bgl. Tr. [in Versen] in 5 A. | [1s] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 015 | 1760 | 009 | Chr. M. Wieland, Clementina von Poretta, Tr. in 5 A. | [6] | Lsp/Ssp. | Rich. | Theol. |
| 016 | 1757/60 | – | G. E. Lessing, Der natürliche Sohn, Ssp. in 5 A. | [6] | Lsp/Ssp. | Diderot | – |
| 017 | 1758/60 | – | G. E. Lessing, Der Hausvater, Ssp. in 5 A. | [6] | Lsp/Ssp. | Diderot | – |
| 018 | 1761 | 010 | G. C. Pfeffel, Der Einsiedler, Tr. in Versen in 1 A. | [6] | Lsp/Ssp. | – | – |
| 019 | 1763 | 011 | J. J. Dusch, Der Bankerot, bgl. Tr. in 5 H. | [3] | Lsp/Ssp. | – | – |
| 020 | 1764 | + | G. C. Pfeffel, Serena, bgl. Tr. in Prose und 1 A. | [1] | bgl. Tr. | Landois | – |
| 021 | 1764 | 014 | O. N. Baumgarten, Carl von Drontheim, Tr. in 5 A. | [1s] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 022 | 1765 | 012 | J. H. Steffens, Clarissa, bgl. Tr. in 3 A. | [1s] | bgl. Tr. | Rich. | Theol. |
| 023 | 1765 | 013 | J. Chr. Brandes, Miß Fanny, [bgl.] Tr. in Prosa | [2b] | bgl. Tr. | Prévot | – |
| 024 | 1766 | 015 | J. Chr. Lossius, Amalia, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [S] | Theol. |
| 025 | 1767 | 016 | H. P. Sturz, Julie, [bgl.] Tr. in 5 A. | [4h] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 026 | 1768 | + | Chr. F. Weiße, Romeo und Julie, bgl. Tr. in 5 A. | [4h] | bgl. Tr. | Shakesp. | – |
| 027 | 1768 | 017 | Nüscheler, Inckle und Yaricko, Pros. Tr. in 3 H. | [1] | bgl. Tr. | Gellert | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|---------|--------|--|--------|-----------|---------|---------|
| 028 | 1768 | 018 | J. H. Faber, Inkle und Yariko, Tr. in Versen in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | Gellert | Theol. |
| 029 | 1757/68 | 019[a] | J. H. Steffens, Cleveland, oder: Die redliche Untreue, Tr. in 5 A. | | | | |
| | | 019[b] | Cleveland, oder: Der irrende Philosoph, Ssp. in 5 A. | [1] | hist. Dr. | – | – |
| 030 | 1768 | – | [Anonymus], Die versäumte Erziehung, Tr. in Prosa in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 031 | 1769 | + | J. A. E. v. Ghelen, Die Menschlichkeit, bgl. Tr. in 5 A. | [6i] | Lsp/Ssp. | Boisset | Jus |
| 032 | 1769 | 020 | [Anonymus], Die unglückl. Belohnung, Tr. in 5 A. | [4] | her. Tr. | – | – |
| 033 | 1769 | 021 | E. Fr. H. Falcke, Braitwell, bgl. Tr. in 1 A. | [1s] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 034 | 1770 | 022 | J. G. Chr. Nonne, Don Pedro und Anton, bgl. Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 035 | 1770 | 025 | J. B. Pelzel, Yariko, Tr. in 1 H. | [4] | bgl. Tr. | – | – |
| 036 | 1770 | 027 | B. Pfeufer, Vendelino, Tr. in 3 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |
| 037 | 1771 | + | Chr. H. Schmid, Die Wayse, bgl. Tr. in 5 A. | [5i] | bgl. Tr. | Otway | – |
| 038 | 1771 | 023 | T. Ph. v. Gebler, Klementine od. das Testament, Dr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 039 | 1771 | 026 | [Anonymus], Mis Jenny, trag. Nachspiel | [4h'] | bgl. Tr. | Spect. | – |
| 040 | 1771 | 028 | J. I. Zimmermann, Dithmar, Tr. in 5 A. | [5'] | hist. Dr. | – | – |
| 041 | 1771/72 | 024 | B. Pfeufer, Carl und Leonore, Tr. in 3 H. | [2b] | bgl. Tr. | – | – |
| 042 | 1772 | 029 | G. E. Lessing, Emilia Galotti, Tr. in 5 A. | [4h''] | bgl. Tr. | – | – |
| 043 | 1772 | 030 | E. Th. J. Brückner, Emilie Blontville, bgl. Tr. in 5 H. | [1] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 044 | 1772 | 031 | T. Ph. v. Gebler, Die Osmonde, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 045 | 1772 | 032 | [Anonymus], Fanny, trag. Nachspiel | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 046 | 1772/80 | 111 | Chr. F. Weiße, Die Flucht, bgl. Tr. in 5 A. | [4h] | bgl. Tr. | – | – |
| 047 | 1773 | 033 | H. C. H. v. Trautzschen, Frh. von Bardenfels, bgl. Tr. in 3 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 048 | 1773 | 038 | J. Chr. Brandes, Olivie, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 049 | 1773 | 042 | J. J. Bodmer, Fußfall vor den Brüdern, Tr. in 3 A. | [6'] | bibl. Dr. | – | Theol. |
| 050 | 1774 | 034 | [Anonymus], Der Jesuit, Tr. in 6 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |
| 051 | 1774 | 035 | [Anonymus], Die Braut im Portrait, Tr. in 5 A. | [2b] | bgl. Tr. | – | – |
| 052 | 1774 | 036 | J. W. v. Goethe, Clavigo, Tr. in 5 A. | [4h''] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 053 | 1774 | 037 | J. M. R. Lenz, Der Hofmeister, Komödie | [6] | Lsp/Ssp. | – | – |
| 054 | 1774 | 039 | J. C. Wezel, Der Graf von Wickham, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 055 | 1774 | 040 | T. Ph. v. Gebler, Adelheid von Sigmar, Tr. in 5 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|------|--------|--|-------|-----------|---------|---------|
| 056 | 1774 | 041 | L. Zehnmark, Salvini und Adelson, Tr. in 3 A. | [1b] | bgl. Tr. | Arnauld | – |
| 057 | 1774 | 054 | A. A. v. Crentzin, Derbi, od. Treue u. Freundschaft, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | – | – |
| 058 | 1775 | 043 | Chr. E. Buschmann, Der Graf von der Weide, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 059 | 1775 | 044 | J. Chr. Unzer, Diego und Leonore, Tr. in 4 A. | [2] | hist. Dr. | [E] | Theol. |
| 060 | 1775 | 045 | G. Fr. W. Grossmann, Wilhelmine von Blondheim, Tr. in 3 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | Jus |
| 061 | 1775 | 046 | Fr. M. Klinger, Das leidende Weib, Tr. in 5 A. | [5i] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 062 | 1775 | 047 | E. L. M. Rathlef, Die Mohrinn zu Hamburg, Tragödie in 5 A. | [5] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 063 | 1775 | 048 | Fr. Th. Thilo, Euphemie, bgl. Tr. in 5 A. | [1s] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 064 | 1775 | 049 | A. S. Goué/Wahr, Iwanette und Stormond, Tr. in 3 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 065 | 1775 | 050 | [Anonymus], Emilie Fermont, bgl. Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | – |
| 066 | 1775 | 051 | J. G. Göntgen, Anna Bell, Tr. in 1 A. | [2] | bgl. Tr. | Arnauld | – |
| 067 | 1775 | 052 | [Anonymus], Der Büchsenmacher, bgl. Tr. in 2 A. | [4] | bgl. Tr. | [E] | Jus |
| 068 | 1775 | 053 | Chr. G. Klemm, Eduard von Blumenberg, Tr. in 4 A. | [1b'] | bgl. Tr. | – | – |
| 069 | 1775 | 055 | H. L. Wagner, Die Reue nach der Tat, Ssp. in 6 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 070 | 1775 | 056 | I. Hübner, Der Lohn der Freundschaft, Trag. Ssp. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 071 | 1775 | 059 | A. S. Goué, Masuren oder Der junge Werther, Tr. in 3 H. | [5] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 072 | 1775 | 069 | H. F. Möller, Ernest und Gabriele, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | (R) | – |
| 073 | 1775 | – | [Anonymus], Irene, bgl. Tr. in 5 A. | [1b] | bgl. Tr. | – | – |
| ? | 1775 | – | [Anonymus], Die Freundschaft, bgl. Tr. in 3 A. | – | – | – | – |
| 074 | 1776 | + | Fr. W. Gotter, Mariane, bgl. Tr. in 3 H. | [2] | bgl. Tr. | LaHarpe | Theol. |
| 075 | 1776 | 057 | J. W. v. Goethe, Stella, Ssp. für Liebende in 5 A. | [5i] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 076 | 1776 | 058 | J. A. Leisewitz, Julius von Tarent, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | [E] | – |
| 077 | 1776 | 060/61 | André/Cremeri, Die Leiden des Jungen Werthers, Tr. in 3 A. | [5i] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 078 | 1776 | 062 | J. J. Bodmer, Der Tod des ersten Menschen, rel. Dr. | [5'] | bibl. Dr. | – | Theol. |
| 079 | 1776 | 063 | Fr. M. Klinger, Die neue Arria, Ssp. in 5 A. | [4] | bgl. Tr. | [E] | – |
| ? | 1776 | 064 | M. J. Graf v. Daun, Adelson und Salvini, Tr. in 5 H. | – | – | – | – |
| 080 | 1776 | 065 | K. H. Seibt, Gabriele Montalto, Tr. in 1 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|------|---------------|------|---|-------|-----------|---------|---------|
| 081 | 1776 | 066 | O. F. v. Diericke, Eduard Montrose, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | – | – |
| =082 | 1776 | 082 | [Anonymus], Montrose und Surrey, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | – | – |
| 083 | 1776 | 067 | L. Ph. Hahn, Graf Karl von Adelsberg, Tr. in 5 A. | [1'] | bgl. Tr. | – | – |
| 084 | 1766 | 068 | B. Chr. d'Arien, Marie von Wahlburg, Tr. in 5 A. | [5i] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 085 | 1776 | 070 | [Anonymus], Der Bürger, Tr. in 3 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 086 | 1776 | 071 | J. Fr. E. Albrecht, Der unnatürliche Vater, Tr. in 3 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 087 | 1776 | 072 | Fr. M. Klinger, Die Zwillinge, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | – | Theol. |
| 088 | 1776 | 073 | H. L. Wagner, Die Kindermörderin, Tr. in 6 A. | [5i] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 089 | 1776 | 074 | J. Chr. Riebe, Die Gräfin von Wollberg, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 090 | 1776 | 075 | H. F. Möller, Der Graf von Walltron, Tr. in 5 A. | [6i] | Lsp/Ssp. | – | Jus |
| 091 | 1776 | 080 | Fr. M. Klinger, Sturm und Drang, Ssp. in 5 A. | [6] | Lsp/Ssp. | – | – |
| 092 | 1776/ 1803 | – | J. J. Engel, Eid und Pflicht, bgl. Tr. in 5 A. | [6i] | Lsp/Ssp. | – | Jus |
| 093 | 1777 | 076 | J. M. R. Lenz, Der Engländer, Dram. Phantasie | [5] | bgl. Tr. | [E, W] | Theol. |
| 094 | 1777 | 077 | J. Fr. Schink, Gianetta Montaldi, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 095 | 1777 | 078 | Engelbrecht/Förster, Caroline von Rothenburg, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | (R) | – |
| ? | 1777 | 079 | Chr. B. Schücking, [Königin] Elisabeth | – | – | – | – |
| 096 | 1777/78 | 081 | Fr. K. A. v. Trützschler, Liebe und Tod, Tr. in 5 A. | [4h] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 097 | 1777 | 083 | A. A. v. Crentzin, Der Hochzeitstag, Tr. in 5 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |
| 098 | 1777 | 084 | A. M. Sprickmann, Eulalia, Tr. in 5 A. | [4h] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 099 | 1777 | 085 | [Anonymus], Amalia, unglückl. durch ihre Stiefmutter, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 100 | 1777 | 088 | Willer, Werther, bgl. Tr. in Prosa und 3 A. | [1a] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 101 | 1778 | 086 | J. Fr. Schink, Lina von Waller, Tr. in 3 A. | [5i] | bgl. Tr. | [W] | Theol. |
| 102 | 1778 | 087 | Chr. K. Schlegel, Düval und Charmille, bgl. Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | – |
| 103 | 1778 | 089 | E. L. M. Rathlef, Albert Stucke, Tragödie in 5 A. | [1b] | bgl. Tr. | Ballade | – |
| 104 | 1778 | 090 | F. G. v. Nesselrode, Karoline od. d. unschuldige Opfer, Tr. in 3 H. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 105 | 1778 | 091 | [Anonymus], Marie und Emilie, Tr. in 1 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|------|---------|------|--|-------|-----------|---------|---------|
| 106 | 1778 | 092 | F. Christel, Norwich und Julie, Tr. in 2 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 107 | 1778 | 093 | H. F. Möller, Heinrich und Henriette, Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 108 | 1778 | 095 | H. F. Möller, Emanuel und El-mire, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 109 | 1778 | 096 | T. B. Berger, Galora von Venedig, Tr. in 5 A. | [2a] | hist. Dr. | [E] | – |
| 110 | 1778 | 096 | B. D. A. Cremeri, Amaliens Verlöbniß, Tr. in 2 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 111 | 1778 | 097 | J. A. Weiß, Rose Die Nonne wider ihren Willen, Tr. in 5 A. | [2b] | bgl. Tr. | [E] | Theol. |
| 112 | 1778 | 098 | [Anonymus], Die verkannte Unschuld, Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | – |
| ? | 1778 | 099 | A. P. Pollinger, Antonio del Basiano, Tr. in 5 A. | – | – | – | – |
| =113 | 1778 | – | [Anonymus], Jenny, bgl. Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 114 | 1779 | 100 | [Anonymus], Charlotte e. Opfer d. Aberglaubens, Tr. in 3 A. | [4h] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 115 | 1779 | 101 | J. A. Weiß, Von Helm, Der Freygeist ein Heuchler, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 116 | 1779 | 102 | S. G. Bürde, Hochzeitstag, od. das Ärgste kommt zuletzt, Tr. in 5 A. | [5] | bgl. Tr. | [W] | – |
| 117 | 1779 | 103 | E. L. M. Rathlef, Das Schloß Wartenfels, Tragödie in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 118 | 1779 | 104 | Wagner, Der deutsche Student, Tr. in 5 A. | [1b] | bgl. Tr. | – | – |
| 119 | 1779 | 105 | J. I. Zimmermann, Der verlorne Sohn, Tr. in 5 A. | [6'] | bibl. Dr. | – | Theol. |
| 120 | 1779 | 106 | Fr. S. L. v. Eckhardt, Die Schwäger, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 121 | 1779 | 107 | L. Th. Kosegarten, Darmond und Allwina, Tr. in 5 A. | [2] | Rit. ssp. | [W] | – |
| 122 | 1779 | 108 | M. Scholz, Richard und Karl, Tr. in 5 A. | [2b] | bgl. Tr. | – | – |
| 123 | 1779 | 109 | B. Chr. d'Arien, Natur und Liebe im Streit, Tr. in 5 A. | [6] | her. Ssp. | – | – |
| 124 | 1779 | 110 | F. A. Schraembl, Edwin und Emma, Ssp. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 125 | 1779/80 | 114 | J. Chr. Brandes, Ottilie, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [S] | – |
| 126 | 1780 | 112 | Chr. F. Weiße, Jean Calas, Hist. Ssp. in 5 A. | [4] | hist. Dr. | – | – |
| 127 | 1780 | 113 | J. G. B. Büschel, Theodor und Julie, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 128 | 1780 | 115 | H. Keller, Die Räuber, Scene a. d. Menschenleben | [2a] | bgl. Tr. | – | – |
| 129 | 1780 | 116 | J. Prothke, Das leidende Mädchen, Tr. in 1 A. | [4] | bgl. Tr. | – | – |
| 130 | 1780 | 117 | L. C. H. Bischof, Der Judenfeind, Tr. in 1 A. | [2] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 131 | 1780 | 118 | A. Th. Linhart, Miß Jenny Love, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|---------|------|---|--------|-----------|----------|---------|
| 132 | 1780 | 119 | [Anonymus], Das unschuldige Opfer, Tr. in 4 A. | [2] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 133 | 1780 | 120 | J. A. v. Wielandt, Der Graf von Murrbach, Tr. in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | Arnauld | Jus |
| 134 | 1780/81 | 121 | J. Ph. Wollstädt, Cassio, od., d. Folgen d. Eifersucht, Tr. in 5 A. | [2] | Rit. ssp. | Shakesp. | – |
| 135 | 1780 | 122 | F. Prinner, Das Ideal d. unglückl. Liebe od. Klerdon, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 136 | 1780 | 131 | [Anonymus], Richmond Falben, bgl. Tr. in 5 A. | [1'] | bgl. Tr. | – | – |
| 137 | 1780 | – | [Anonymus], Don Vincenzo, bgl. Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 138 | 1780 | – | O. H. v. Gemmingen, Der deutsche Hausvater, Ssp. in 5 H. | [6] | Lsp/Ssp. | – | – |
| 139 | 1781 | 123 | [Anonymus], Das Kriege recht, Tragödie | [5i] | bgl. Tr. | Mercier | Jus |
| 140 | 1781 | 124 | P., Ardenhut und Mathilde, Tr. in 3 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 141 | 1781 | 125 | Chr. J. L. Steltzer, Franziska Montenegro, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | [E] | Theol. |
| 142 | 1781 | 126 | K. F. D. Grohmann, Gioconda od. Weiberrache, Tr. in 3 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 143 | 1781 | 127 | [Anonymus], Lidie von Wendlant, bgl. Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 144 | 1781 | 129 | K. F. G. v. Steinsberg, Miß Nelly Randolph, Tr. in 3 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 145 | 1781 | 130 | K. F. G. v. Steinsberg, Der Patriotismus, Tr. in 5 A. | [K2+5] | her. Tr. | – | – |
| 146 | 1781 | 132 | F. M. Vierthaler, Der englische Spion, Tr. in 4 A. | [1b'] | hist. Dr. | – | Theol. |
| 147 | 1781 | 133 | Fr. Schiller, Die Räuber, Ssp. in 5 A. | [K1+5] | her. Dr. | – | – |
| 148 | 1781 | – | W. A. Iffland, Albert von Thurneisen, bgl. Tr. in 4 A. | [5i] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 149 | 1782 | 134 | L. Erdmann, Der Hochverrath, Tr. in 3 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 150 | 1782 | 135 | L. Erdmann, Der Mißverstand, Tr. in 3 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | – |
| 151 | 1782 | 136 | J. M. Babo, Oda, die Frau von zween Männern, Tr. in 5 A. | [1] | Rit. ssp. | – | – |
| 152 | 1782 | 137 | L. Erdmann, Sainville, Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | – | – |
| 153 | 1782 | 138 | L. Erdmann, Wind und Wetter, Tr. in 2 A. | [1] | her. Tr. | – | – |
| 154 | 1783 | 139 | Fr. v. Eckart, Die vergiftete Traube, Tr. in 1 A. | [1b] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 155 | 1783/89 | 140 | [Anonymus], Rudolph von Mohelli, Tr. in 3 A. | [1b] | bgl. Tr. | – | – |
| 156 | 1783/84 | 141 | Fr. Schiller, Kabale und Liebe, bgl. Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 157 | 1783 | 146 | K. F. Zimdar, Freundschaft, Liebe, Eifersucht, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E, W] | – |
| 158 | 1784 | 142 | [Anonymus], Afterwerther, Ssp. in 5 A. | [6] | Lsp/Ssp. | [W] | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|------|---------|------|---|-------|-----------|---------|---------|
| 159 | 1784 | 143 | [Anonymus], Carl Otterbek, Tr. in 5 A. | [1b] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 160 | 1784 | 144 | J. G. Dyk, Leichtsinu u. Verführung, bgl. Tr. in 5 A. | [1b] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| =161 | 1784/87 | 161 | J. G. Dyk, Ferdinand Pernau, Tr. in 5 A. | [1b] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 162 | 1784 | 145 | A. W. Iffland, Verbrechen aus Ehrsucht, ernsth. Fam.gemälde in 5 A. | [3] | Lsp/Ssp. | – | Jus |
| 163 | 1784 | 147 | [Anonymus], Der Mann hat Brüder, Tr. in 3 A. | [1b'] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 164 | 1784 | – | Fr. L. Schröder, Der Vetter in Lissabon, bgl. Fam.gemälde in 3 A. | [3] | Lsp/Ssp. | – | Päd. |
| 165 | 1781/85 | 159 | J. Cornelius, Robert und Florinde, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 166 | 1785 | 148 | A. D. Breicha, Amalie Ringenthal, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [K+L] | Päd. |
| ? | 1785 | 149 | [Anonymus], Bianca Capello, Tr. in 5 A. | – | – | – | – |
| 167 | 1785/86 | 150 | F. J., Bianca Capello, Tr. in 5 A. | [4] | bgl. Tr. | (R) | – |
| 168 | 1785 | 151 | G. L. Hempel, Karl und Louise, bgl. Tr. in 5 A. | [2b] | bgl. Tr. | – | Jus |
| =169 | 1786 | 160 | H. Reinicke, Karl und Louise, Tr. in 5 A. | [2b] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 170 | 1785 | 152 | G. L. Hempel, Schwärmereyen d. Liebe u. d. Hasses, bgl. Tr. in 4 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |
| 171 | 1785 | 153 | J. Fr. Knüppel, Thomas Morus, Tr. in 5 A. | [4] | hist. Dr. | – | – |
| 172 | 1785 | – | A. G. Hartmann, Elise Hellfeld, bgl. Tr. in 3 A. | [4] | bgl. Tr. | – | – |
| 173 | 1786 | 154 | S. G. Presser, Die Folgen der Eifersucht, Tr. in 2 A. | [2] | hist. Dr. | – | – |
| 174 | 1786 | 155 | A. G. Hartmann, Rosenwald, od. d. Folgen verkannter Liebe, Tr. | [2a] | bgl. Tr. | (R)[W] | – |
| 175 | 1786 | 156 | F. G. Fruhwürth, Die Grafen Waldau, Tr. in 5 A. | [1b'] | Rit. ssp. | – | – |
| 176 | 1786 | 157 | C. Starke, Die traurige Hochzeitsfeier, Tr. in 3 A. | [5i] | bgl. Tr. | – | – |
| 177 | 1786 | 158 | J. G. Dyk, Thomas Morus, Tr. in 5 A. | [4] | hist. Dr. | – | – |
| 178 | 1787 | 162 | J. A. Waldvogel, Die falschen Banknoten, Tr. in 3 A. | [1a] | bgl. Tr. | [S] | Päd. |
| 179 | 1787 | 163 | W. A. v. Eding, Der Kornet, Tr. nach e. vaterländ. Sage in 5 A. | [2] | hist. Dr. | – | – |
| 180 | 1787 | 164 | E. Schikaneder, Der Grandprofos, Tr. in 4 A. | [4] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 181 | 1787 | 165 | J. N. Perchtold, Amalie von Kronbach, Tr. in 4 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 182 | 1787 | 166 | Fr. Spach, Karl von Schönbach, Tr. in 4 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 183 | 1787 | 167 | [Anonymus], Graf Gulli und seine Söhne, Tr. in 3 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|---------|------|--|--------|-----------|---------|---------|
| 184 | 1787 | 169 | J. G. Schwarz, Carmelia Rondo, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 185 | 1787 | – | H. J. Wüst, Der gleichgültige Offizier, bgl. Tr. in 3 A. | [2a] | bgl. Tr. | – | – |
| 186 | 1787 | 171 | G. C. Claudius, Die Grafen Guiscard, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | [K+L] | – |
| 187 | 1787 | 172 | Fr. Spach, Verbrechen aus Vaterliebe, Tr. in 4 A. | [2] | bgl. Tr. | [K+L] | Jus |
| 188 | 1788 | 168 | E. Thon, Adelheit von Rastenberg, Tr. in 5 A. | [2] | Rit. ssp. | – | – |
| 189 | 1788 | 170 | J. Maas, Cuenna, Tr. in 4 A. | [1a] | hist. Dr. | (R) | – |
| 190 | 1789 | 173 | J. Korompay, Sandiny von Waldsburg, Tr. in 5 A. | [1'] | bgl. Tr. | – | – |
| 191 | 1789 | 174 | [Chr. Fr. Bretzner], Der Lüderliche, Trag. Gemälde in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | – | Päd. |
| 192 | 1789 | 175 | [Anonymus], Die Ketzler, Tr. in 3 A. | – | – | Bahrdr | Theol. |
| 193 | 1789 | 176 | [Anonymus], Fanny od. d. Verlobte d. Fürsten, Tr. in 5 A. | [4] | her. Tr. | – | – |
| 194 | 1789 | 177 | [Anonymus], Der Mord, Tr. in 5 A. | [2] | her. Tr. | – | – |
| 195 | 1789 | 187 | K. G. Lessing, Der Schlaftrunk, bgl. Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | Nr. 088 | Jus |
| 196 | 1789 | 190 | J. Chr. Brandes, Rahel, od.: Die schöne Jüdin, Tr. in 3 A. | [K1+5] | hist. Dr. | – | – |
| 197 | 1789 | 212 | A. H. J. Lafontaine, Antonie od. d. Klostersgelübde, Tr. | [5] | bgl. Tr. | Arnauld | Theol. |
| ? | 1790 | 178 | [Anonymus], Nina, oder Liebe und Klosterzwang, Tr. | – | – | – | – |
| 198 | 1790 | 179 | Wienbrack, Adolph und Minna oder d. Täuschung, Tr. in 5 A. | [2] | – | – | Jus |
| ? | 1790 | 180 | F. Christel, Wolmar und Camille, Tr. in 5 A. | – | – | – | – |
| 199 | 1790 | 181 | Chr. A. Vulpius, Leidenschaft und Liebe, Tr. in 5 A. | [5] | hist. Dr. | – | – |
| ? | 1790 | 182 | J. J. Chr. Reck, Olivie Amenuti, Tr. in 5 A. | – | – | – | – |
| 200 | 1790 | 183 | Chr. Fr. Bretzner, Der Geisterbeschwörer, Tr. in 3 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 201 | 1790 | 184 | H. Zschokke, Graf Monaldeschi, Tr. in 5 A. | [2] | hist. Dr. | [K+L] | – |
| 202 | 1790 | 185 | E. A. W. Rost, Alonso und Leonore, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 203 | 1790 | 186 | [Anonymus], Marschall Rubin und sein Sohn, Tr. in 3 A. | [6i] | Lsp/Ssp. | – | – |
| 204 | 1790/92 | 188 | C. Reiner, Sophie, Tr. in 5 A. | [5i] | bgl. Tr. | – | – |
| 205 | 1790 | 189 | J. Fr. Schink, Die Leidenschaften, Tr. in 5 A. | [1] | hist. Dr. | – | – |
| 206 | 1790 | 191 | Chr. A. Vulpius, Serafina, Tr. in 5 A. | [4] | her. Tr. | (R) | – |
| 207 | 1790 | – | Fr. Rosenberg, Ehrgeiz und Vorurtheil, bgl. Tr. in 5 H. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 208 | 1790/91 | – | L. Y. v. Buri, Die Stimme des Volkes, bgl. Tr. in 4 A. | [2] | hist. Dr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|---------|------|--|--------|-----------|----------|---------|
| 209 | 1791 | 192 | [Anonymus], Ormenio und Klarisse, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 210 | 1791 | 194 | Fr. W. Ziegler, Eulalia Meinau, bgl. Tr. in 4 A. | [1b'] | bgl. Tr. | Kotzebue | – |
| 211 | 1791 | 195 | Fr. W. Ziegler, Mathilde Gräfin von Gießbach, Tr. in 5 A. | [1b'] | Rit. ssp. | – | – |
| 212 | 1791 | 196 | [Anonymus], Ada von Draiwing, Tr. in 5 A. | [2] | Rit. ssp. | – | – |
| 213 | 1791 | 199 | K. I. Geiger, Laster ist oft Tugend, Tr. in 3 A. | [2] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 214 | 1791/92 | 193 | J. L. B., Grimaldo und Laura, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | – | – |
| 215 | 1792 | 197 | Chr. A. Vulpius, Graf Benjowsky, Tr. in 5 A. | [5] | her. Tr. | – | – |
| 216 | 1792 | 198 | K. F. Schelcher, Capello und Turii, Ssp. in 4 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| ? | 1792 | 200 | J. G. Essich, Bianca Capello, Tr. | – | – | – | – |
| 217 | 1792 | 201 | F. A. v. Bromme, Cuenna und Vivonne, Tr. in 5 A. | [5] | hist. Dr. | (R) | – |
| 218 | 1792 | 202 | C. Frh. v. Reitzenstein, Graf Königsmark, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E, K+L] | – |
| 219 | 1792 | 203 | J. N. Komareck, Marie von Montalban, Tr. m. Chören in 5 A. | [1] | hist. Dr. | Plümicke | Theol. |
| 220 | 1793 | 204 | Fr. Leo, Der Generalmarsch, Tr. in 4 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 221 | 1793 | 205 | C. Frh. v. Reitzenstein, Die Negerklaven, Tr. in 5 A. | [K2+1] | her. Tr. | – | Theol. |
| 222 | 1793 | 206 | J. N. Komareck, Krok, Tr. in 3 A. | [K1+5] | hist. Dr. | – | Theol. |
| 223 | 1793 | – | L. Y. v. Buri, Ludwig Capet, bgl. Tr. in 4 A. | [4] | hist. Dr. | – | – |
| 224 | 1794 | – | A. Klein, Sieg der Tugend und d. Liebe, bgl. Ssp. in 4 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 225 | 1794 | 207 | A. Fr. Schultze, Das Opfer d. Leidenschaft, Tr. in 3 A. | [4] | bgl. Tr. | – | Theol. |
| 226 | 1794 | 208 | H. Meyer, Hartmuth Hager, Tr. in 5 A. | [K1+5] | Rit. ssp. | – | Theol. |
| 227 | 1794 | 209 | Chr. J. S. Contessa, Hedwig von Wolfsstein, Tr. in 3 A. | [1] | Rit. ssp. | – | Theol. |
| 228 | 1794 | 210 | F. A. v. Kotzebue, Graf Benjowski, Ssp. in 5 A. | [6] | her. Ssp. | – | – |
| 229 | 1795 | 211 | J. Fr. E. Albrecht, Wilhelmine Relast, Tr. in 5 A. | [1a] | bgl. Tr. | Lillo | – |
| 230 | 1795 | 213 | [Anonymus], Guido Jaffieri, Tr. in 5 A. | [5] | hist. Dr. | Otway | – |
| 231 | 1795 | 214? | [Anonymus], Minna, Tr. in 5 A. | [2] | Rit. ssp. | – | – |
| 232 | 1795/96 | 215 | [H. G. Schmieder?], Tugendopfer, Tr. in 5 A. | [2] | bgl. Tr. | [E] | – |
| 233 | 1796 | 216 | A. W. Heidemann, Tugend und Laster, Tr. in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | – | Jus |
| 234 | 1796 | 217 | [Anonymus], Pfaffengroll, Tr. in 5 A. | [1] | bgl. Tr. | – | – |
| 235 | 1796 | 218 | [Anonymus], Kabale und Rache, Tr. in 5 A. | [4] | hist. Dr. | – | – |

| Nr. | Jahr | schm | Titel | Typus | Gattung | Prätext | Kontext |
|-----|------|------|--|-------|-----------|---------|---------|
| ? | 1796 | 219 | Z., Laura Mollise, Tr. in 5 A. | – | – | – | – |
| 236 | 1797 | 220 | K. Fr. Kahlert, Maria von Schwawingen, Tr. in 5 A. | [1] | Rit. ssp. | – | Theol. |
| 237 | 1797 | 221 | Chr. Fr. Nielsen, Klara von Synau, Tr. in 5 A. | [2a] | bgl. Tr. | (R) | – |
| 238 | 1797 | 222 | E. A. Fr. Klingemann, Die Maske, Tr. in 4 A. | [1] | hist. Dr. | – | – |
| 239 | 1797 | 223 | [Anonymus], Tiepolo, Tr. in 5 A. | [5] | hist. Dr. | – | – |
| ? | 1797 | 227 | J. Fr. J. Bauer, Karl von Hochberg, Tr. in 4 A. | – | – | – | – |
| ? | 1798 | 225 | [Anonymus], Der Abschied, Tr. in 2 A. | – | – | – | – |
| 240 | 1798 | 224 | Körtingen, Anello, Tr. in 5 A. | [2] | Rit. ssp. | – | – |
| 241 | 1798 | 226 | K. Wallishauser, Manuel, der falsche Freund, Tr. in 5 A. | [1] | hist. Dr. | – | – |
| ? | 1798 | 228 | K. Wehrlich, Seltamiro, Tr. in 5 A. | – | – | – | – |
| ? | 1798 | 229 | S. Oehringen, Die unglückliche Vorstellung, Tr. in 3 H. | – | – | – | – |
| 242 | 1799 | – | A. W. Iffland, Das Gewissen, bgl. Tr. in 5 A. | [1b'] | bgl. Tr. | – | – |

7.2 Verzeichnis der Abkürzungen

7.2.1 Abkürzungen für Reihen, Zeitschriften

| | |
|-------------------------|--|
| ADB | Allgemeine deutsche Biographie. Hrsg. durch die Historische Kommission bei der Königlich Akademie der Wissenschaften, Bde. 1–56, Leipzig, München, 1875–1912 |
| DLE | Deutsche Literatur Sammlung literarischer Kunst- und Kulturdenkmäler in Entwicklungsreihen. In Gemeinschaft mit Walther Brecht und Dietrich Kralik, hrsg. von Heinz Kindermann. |
| DSW | Die Deutsche Schaubühne zu Wienn, nach Alten und Neuen Mustern, [Bde. 1–12], Wienn, Bey Johann Paul Krauß, in seinem Gewölbe nächst der Kayserl. Burg, 1749 [bis 1764]. |
| HA | Goethe Werke Hamburger Ausgabe in 14 Bänden, Textkritisch durchgesehen und kommentiert von Erich Trunz, Neubearbeitung München (Beck), 5., überarb. Aufl. 1976 bis 11., überarb. Aufl. 1978. |
| Jb. d. dt. Schillerges. | Jahrbuch der deutschen Schillergesellschaft, im Auftrag des Vorstands hrsg. von Fritz Martini, Walter Müller-Seidel, Bernhard Zeller. |
| KKN | Kaiserlich-Königliches Nationaltheater, Wien, Bde. I–VI, 1778–1782. |
| Nationalausgabe | Schillers Werke Nationalausgabe, hrsg. von Julius Petersen und Hermann Schneider, Weimar, 1943ff. |
| NDB | Neue deutsche Biographie, hrsg. von der Historischen Kommission bei der bayerischen Akademie der Wissenschaften Bde. 1–15, Berlin, 1963–1987. |